शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

सामाजिक असमानता

प्राप्तिः 10.05.2024
स्वीकृतः27.06.2024

ममता
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
डी०एस०एन० पी०जी० कॉलेज, उन्ऊ
ईमेलः *yadavmamta0905@gmail.com*

50

सारांश

समानता का आभाव ही असमानता है। असमानता से आशय धन, लाभ, शिक्षा, शक्ति एवं अन्य सभी संसाधनों और सुविधाओं का असमान वितरण है। सामाजिक संसाधन पूंजी के तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है। भौतिक संपत्ति एवं आय के रूप में आर्थिक पूंजी, प्रतिष्ठा और शैक्षणिक योग्यताओं के रूप में सांस्कृतिक पूंजी, सामाजिक संगतियों एवं संपर्कों के जाल के रूप में सामाजिक पूंजी। सामाजिक असमानता लगभग सभी समाजों की विषेशता रही है। परन्तु विभिन्न समाजों में इसकी उत्पत्ति के स्रोत व कारण भिन्न–भिन्न देखे गए हैं। जब व्यक्तियों को किसी समूह में जीवन यापन के समान अवसरों से वंचित होना पड़ता है तो उसे हम सामाजिक असमानता कहते हैं। जटिल समाजों की तुलना में सरल समाज में असमानता कम रही है। जिस किसी भी समाज में सामाजिक स्तरण होता है तो वहां निश्चित रूप से सामाजिक असमानता की झलक दिखाई देती है। समाज में उत्पन्न सामाजिक असमानता को जब उसके प्रारंभिक स्तर पर रोक नहीं जाता है तो यह पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। समाज के विकास के साथ–साथ सामाजिक असमानता की खाई भी बढ़ने लगती है। इसका कारण यह है कि सामाजिक संसाधनों का संकेंद्रण समाज के कुछ विषेश वर्गों तक ही सीमित हो जाता है। असमानता खुले बाजार में अलग–अलग वस्तुओं और सेवाओं की पेशकश करती है।, महत्वाकांक्षा को बढ़ावा देती है, और मेहनतीपन और नवाचार के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है।

मुख्य बिन्दू

सामाजिक असमानता, लिंग, पूंजी, विकास, संसाधन।

सामाजिक असमानता हमारे जीवन के लगभग सभी आयामों को प्रभावित करती है। समाज में जिस व्यक्ति के पास अधिक सुविधा और शक्ति होती है। उसका सामाजिक स्तर उच्च माना जाता है। ठीक इसके विपरीत कम सुविधा और शक्ति से संपन्न लोगों का सामाजिक स्तर निम्न माना जाता है। कोई भी समाज हो समतल धरातल की तरह नहीं हो सकता है। जैसे– भूगर्भ के अंतर्गत बहुत तरह के स्तर पाए जाते हैं। समाज में भी उसी प्रकार बहुत सारे स्तर पाए जाते हैं। जो एक विषेश तरीके से श्रेणीबद्ध होते हैं। प्राय यह स्वीकार किया जाता है कि एक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति

प्रदत्त होती है। जाति व्यवस्था एक अन्य कारक है। जो समाज में असमानता को जन्म देती है। क्योंकि किसी विषेश जाति के अंतर्गत व्यक्ति के व्यावसायिक अवसरों का भी निर्धारण होता है। उदाहरण के लिए दलित जात में जन्म लेने से प्राय व्यक्ति द्वारा सफाई कर्मी या चमड़े का कार्य किया जाता है। और इस प्रकार व्यक्ति इस कार्य से बंधकर रह जाता है। जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक समानता का जन्म होता है।

असमानता संबंधी रिपोर्ट

हमारे देश में असमानता की स्थिति संबंधी रिपोर्ट प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा जारी की जाती है। इस रिपोर्ट में स्वास्थ्य शिक्षा घरेलू विषेशताओं और श्रम बाजार के क्षेत्र में असमानताओं पर जानकारी संकलित की जाती है। असमानताएं जनसंख्या को अधिक संवेदनशील बनाती है। और बहुआयामी गरीबी को प्रेरित करती है। इस रिपोर्ट में मुख्यतः दो खंड होते हैं –आर्थिक पहलू और सामाजिक आर्थिक अभिव्यक्तियां। यह पांच प्रमुख क्षेत्र की जांच करती है जो असमानता की प्रकृति और अनुभव को प्रभावित करते हैं–

1. आय वितरण।
2. श्रम बाजार की गतिशीलता।
3. स्वास्थ्य।
4. शिक्षा और
5. घरेलू विषेशताएं।

डेहरेनडार्फ ने चार प्रकार की असमानताओं का वर्णन किया है जिसमें शारीरिक लक्षण, चरित्र और हितों में प्राकृतिक अंतरों का प्रकार, बुद्धि कौशल और ताकत में श्रेणी के प्राकृतिक अंतर।

वर्तमान समय में असमानता संबंधी विभिन्न पहलुओं पर राष्ट्र की सीमाओं के अंतर्गत उत्पन्न होने वाली समस्याओं में सम्मिलित पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है। अब यह विषय एक राष्ट्रीय विषय नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी फैल चुका है। सामाजिक असमानता के अंतर्गत व्यक्तियों के बीच लैंगिक अंतर उत्पन्न होता है। और समाज में महिलाओं की पहुंच को सीमित करता है। सामाजिक असमानता आमतौर पर परिणाम की समानता की कमी को दर्शाती है। लेकिन वैकल्पिक रूप से इस अवसर तक पहुंचने की असमानता के संदर्भ में अवधारणा बंद किया जा सकता है। यह उस तरीके से जुड़ा है जिसमें असमानता को संपूर्ण सामाजिक अर्थव्यवस्थाओं और इस आधार पर कुशल अधिकारों में प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक अधिकारों में मजदूरी, आय का स्रोत, स्वास्थ्य देखभाल और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता शिक्षा, राजनीति में प्रतिनिधित्व और भागीदारी शामिल है। सामाजिक असमानता आर्थिक असमानता से जुड़ी हुई है। जिसे आमतौर पर आय या धन के आसमान वितरण के आधार पर वर्णित किया जाता है। यह सामाजिक असमानता का अक्षर अध्ययन किया जाने वाला प्रकार है। अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के विषय आमतौर पर आर्थिक असमानता की जांच और व्याख्या करने के लिए विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं। दोनों क्षेत्र इस असमानता पर शोध करने में सक्रिय रूप से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मौजूदा स्थितियों की असमानता को देखकर हम उसे स्रोत की पहचान करते हैं। की असमानता कैसे बढ़ सकती है। और जीवन को देखने के हमारे तरीके में वृद्धि को

प्रमाणित करती है। हम इस महत्वपूर्ण पहलू को परिभाषित कर सकते हैं । क्योंकि इन विचारधाराओं के आधार पर वर्गीकृत करता है। कि क्या वे असमानता को उचित या अपरिहार्य बनाते हैं जिसके माध्यम से हम उन्हें अपरिहार्य मानते हैं। कार्ल मार्क्स ने अपने प्रमुख सिद्धांतों में बताया कि दो प्रमुख सामाजिक वर्ग मौजूद है। और दोनों के बीच महत्वपूर्ण असमानता देखने को मिलती है। दोनों को किसी दिए गए समाज में उत्पादन के साधनों के साथ, उनके संबंधों द्वारा चित्रित किया गया है। उन दो वर्गों को उत्पादन के साधनों के मालिकों के रूप में परिभाषित किया गया और वह जो उत्पादन के साधनों के मालिकों को अपना श्रम बेचते हैं। पूंजीवादी समाजों में दो वर्गीकरण के सदस्यों के विरोधी सामाजिक हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पूंजीपतियों के लिए पूंजीगत लाभ और मजदूरों के लिए अच्छी मजदूरी जिससे सामाजिक संघर्ष पैदा होता है।

मैक्स वेबर धन और स्थिति की जांच के लिए सामाजिक वर्गों का उपयोग करते हैं सामाजिक वर्ग प्रतिष्ठा और विशेषाधिकारों से डरता से जुड़ा हुआ है यह सामाजिक पुनरुत उत्पादन की व्याख्या कर सकता है। सामान्य तौर पर सामाजिक वर्ग को एक पदानुक्रम में स्थित समान श्रेणीबद्ध लोगों की एक बड़ी श्रेणी के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। और व्यवसाय, शिक्षा, आय और धन जैसे गुणों द्वारा पदानुक्रम में अन्य बड़ी श्रेणियां से अलग किया जा सकता है।

सामाजिक असमानता के संकेतक के रूप में अक्सर उपयोग किए जाने वाले मात्रात्मक चर आय और धन है।

आज विश्व में अनेक प्रकार की असमानताएं देखने को मिलती हैं।

'नस्लीय और जातीय असमानता–जाति असमानता एक समाज के भीतर नस्लीय और जातीय श्रेणियां के बीच पदानुक्रमित सामाजिक भेद का परिणाम है अक्सर त्वचा के रंग और अन्य शारीरिक विशेषताओं के आधार पर यह असमानता स्थापित की जाती हैं।

आयु असमानता

आयुर्वेद भाव को उनकी उम्र के कारण भारतीय संसाधनों या विशेषाधिकारों के संबंध में लोगों के साथ अनुच्छेद व्यवहार के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विश्वासों, दृष्टिकोण, मानदंड और मूल्यों का एक समूह है जिसका उपयोग आयु आधारित पूर्वाग्रह, भेदभाव और अधीनता को उच्च ठहराने के लिए किया जाता है। जिसके परिणामस्वरुप कुछ व्यक्तियों को गुणवत्ता के एक सेट के रूप में सीमित कर दिया जाता है।

सामाजिक असमानता के प्रकार

मुख्यतः सामाजिक असमानता के पांच प्रकारों का वर्णन किया जाता है–

जिनमें में धन असमानता, उपचार और जिम्मेदारी असमानता, राजनीतिक असमानता, जीवन असमानता एवं सदस्यता असमानता।

लैंगिक असमानता

परंपरागत रूप से समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता रहा है वह घर और समाज दोनों जगह पर शोषण अपमान और भेदभाव से पीड़ित रही हैं महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दुनिया के हर कोने में प्रचलित है।

सामाजिक असमानता के रूप में लिंग वह है जिसके तहत श्रम को विभाजित करके भूमिकाएं और जिम्मेदारियां सौंप कर और सामाजिक पुरस्कार आवंटित करके महिलाओं और पुरुषों के साथ अलग–अलग व्यवहार किया जाता है। यह सामाजिक असमानता को योगदान देने वाला प्रमुख कारक माना जाता है। विश्व स्तर पर काम में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है परंतु महिलाओं को अभी भी अपनी वेतन विसंगतियों और पुरुषों की कमाई की तुलना में अंतर संबंध में बड़े मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है। समाज की मानसिकता में धीरे–धीरे परिवर्तन आ रहा है। जिसके परिणाम स्वरुप महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर गंभीरता से चिंतन किया जा रहा है। राजनीतिक प्रतिभा के क्षेत्र में भी भारत की स्थिति लगातार सुधार हो रहा है। हमारी सरकार ने विभिन्न प्रकार की योजनाओं जैसे– बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, वन स्टाफ केंद्र योजना, महिला हेल्पलाइन योजना, महिला शक्ति केंद्र जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का प्रयास किया जा रहा है। जिससे लैंगिक असमानता में कमी आएगी। इतना ही नहीं आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हेतु मुद्रा और अन्य महिला केंद्रित योजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

लैंगिक असमानता के प्रकार

अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने लैंगिक असमानता को निम्नलिखित सात रूपों में वर्गीकृत है–

1. मृत्यु संबंधी असमानता।
2. प्रसूति संबंधी असमानता।
3. मौलिक सुविधा संबंधी असमानता।
4. विषेश अवसर संबंधी असमानता।
5. व्यावसायिक संबंधी असमानता।
6. स्वामित्व संबंधी असमानता।
7. घरेलू असमानता।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में बहुत से लोगों का मानना है कि सामाजिक असमानता अक्सर राजनीतिक संघर्ष पैदा करती है। भारतीय समाज में असमानता काफी विस्तृत स्तर पर देखने को मिलती है। बीते कुछ 10 को में भारत में आर्थिक असमानता में वृद्धि हुई है। जिसमें कई समक्ष अर्थव्यवस्थाओं के बीच अमीर– गरीब का अंतर सबसे बड़ा है। घरेलू सर्वेक्षणों से पता चलता है कि हाल के वर्षों में विकास में मंदी के साथ–साथ असमानता में भी कुछ कमी आई है। हम उम्मीद कर सकते हैं कि हमारा सहभागी लोकतंत्र आने वाले समय में पुरुष और महिला के सामूहिक प्रयासों से लैंगिक असमानता की समस्या का समाधान ढूंढने में सक्षम होगे और असमानता जैसी भावना को कम करने में सार्थक परिणाम प्राप्त कर सकेंगे। हमारे समाज में असमानता के प्रमुख कारण मौजूद रहे हैं। जिनमें से कुछ अति महत्वपूर्ण हैं जैसे– गरीबी, लिंग, धर्म और जाति। भारतीय बहुसंख्यक लोगों के निम्न स्तर की आय, बेरोजगारी कहीं ना कहीं असमानता की ओर संकेत करते हैं।

संदर्भ

1. कुमार, सुनील., शर्मा, बृजेष., देवी, सरोज. भारत में लैंगिक असमानता :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।
2. रावत, हरिकृष्णा. उच्चतर समाजशास्त्र विष्वकोश।
3. सिंह, जेपी. समाजविज्ञान विष्वकोश।
4. भारतीय समाज. NCERT.
5. PIB NEWS.
6. Nair, Shalini. (2015). More Gender inequality in India and Pakistan: UN, Indian express-December 15.
7. रूपाली इंगोले, लैंगिक असमानता और भारतीय समाज।